कीरति भनिति भूति भलि सोई।
सुरसरि सम सब कहँ हित होई।।

आमंत्रण पत्र

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा पोषित

'साहित्यार्चन' हिन्दी विभाग तथा गोरखनाथ साहित्यिक केन्द्र
दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गोरखपुर

का

(संयुक्त तत्वावधान)

राष्ट्रीय संगोष्ठी

दिनांक 18–19 अक्टूबर 2024

रामकथा : लोक और शास्त्र

सेवा में, ______________________________

____

____

卐

राष्ट्रीय संगोष्ठी

रामकथा : लोक और शास्त्र

गोरखनाथ साहित्यिक केन्द्र (उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा पोषित) साहित्यिक -सांस्कृतिक गतिविधियों का एक महत्त्वपूर्ण प्रकल्प है । इसकी स्थापना दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय गोरखपुर परिसर में साहित्यिक-सांस्कृतिक कार्यक्रमों को एक मंच प्रदान करने के उद्देश्य से हुई है। गुरु श्री गोरखनाथ जी की पावन तपस्थली पर स्थापित दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गोरखपुर महानगर के हृदय-स्थल में स्थित है। यह रेलवे स्टेशन एवं बस स्टेशन से 1.5 किलोमीटर तथा विमानपत्तन से 8.0 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।

रामकथा भारतीय परिवेश में ही नहीं बल्कि देशान्तर में भी लोकवृत्तों, साहित्यिक कृतियों तथा कलाकृतियों में युग-युगान्तरों से प्रसरित एवं निबद्ध है। भारत की धार्मिक तथा आध्यात्मिक चेतना का श्रीराम में अद्‌भुत मूर्तन हुआ है। कहा भी गया है कि रामो विग्रहवान धर्मः। भारतीय समाज की पीढ़ियाँ दर पीढ़ियाँ रामकथा का गायन करते हुए अनेकशः विदेशी आक्रांताओं के आक्रमणों के झंझावातों में तथा अनेक सामाजिक पारिवारिक संकटों के मध्य रामकथा के माध्यम से ही विजिगीषु वृत्ति तथा जीवन्त प्रेरणा प्राप्त करती रही हैं।

विश्व के अनेकानेक देशों में रामकथा किसी न किसी रूप में साहित्यिक अथवा लोकवृत्त में अद्य यावत प्राप्त है। आज जबकि विश्व के सभी देश अनेक जीवन मूल्यों पर संकट का अनुभव कर रहे हैं तथा कई यांत्रिक और पर्यावरणीय असंतुलन की समस्याएँ विमर्श के केन्द्र में हैं -रामकथा की उपादेयता स्वयंसिद्ध है। यह संगोष्ठी शोधार्थियों के लिए इन सारे सन्दर्भों में रामकथा के लोकवृत्त और साहित्य में उपलब्ध संकेतों को समझने और व्यवहार के पक्ष में अपनी भूमिका तय करने में प्रेरक होगी।

संगोष्ठी में चर्चा हेतु प्रस्तावित विषय

- मराठी भाषा में रामकथा
- बौद्ध साहित्य में रामकथा
- जैन साहित्य में रामकथा
- रामकथा और रामकाव्य परम्परा
- रामकथा और महर्षि वाल्मीकि
- संस्कृत साहित्य में रामकथा
- रामकथा और रामलीला
- अवधी लोकगीतों में रामकथा

- हिन्दी नाटक और रामकथा
- राम की शक्तिपूजा रामकथा का आधुनिक सन्दर्भ
- रामकथा और साकेत
- नेपाली भाषा और रामकथा
- भोजपुरी लोकसाहित्य में रामकथा
- रामकथा और कम्बरामायण
- आधुनिक हिन्दी साहित्य में रामकथा
- भारत की अन्य भाषाओं में रामकथा
- विश्व साहित्य में उपलब्ध रामकथा

राष्ट्रीय संगोष्ठी के मूल विषय रामकथा : लोक और शास्त्र से सम्बन्धित अन्य उपविषयों पर भी आप अपने शोध-पत्र भेज सकते हैं। शोध-पत्र dnpghindi726@gmail.com पर PDF तथा M.S. Word (Kruti dev 010) पर भेज दें।

शोधपत्र पंजीकरण शुल्क

अध्यापक	-	₹ 700
शोध छात्र	-	₹ 500
विद्यार्थी	-	₹ 200

आमंत्रित अतिथि

- आचार्य सदानन्द प्रसाद गुप्त
- आचार्य ईश्वरशरण विश्वकर्मा
- श्री रणविजय सिंह
- आचार्य पंकज सिंह
- आचार्य राधेश्याम सिंह
- आचार्य सिद्धार्थ शंकर
- आचार्य राजेश कुमार मल्ल
- आचार्य शर्वेश पाण्डेय
- आचार्य अजय कुमार
- डॉ. श्यामनन्दन
- डॉ. गोपेश्वर दत्त पाण्डेय
- श्री राकेश शर्मा
- डॉ. शैलेश श्रीवास्तव
- डॉ. सत्यप्रिय पाण्डेय
- डॉ. अमित पाण्डेय
- डॉ. सत्यप्रकाश तिवारी
- डॉ. संजीव राय
- डॉ. शंभुनाथ मिश्र

आयोजन समिति

संरक्षक : परमपूज्य गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त योगी आदित्यनाथ जी महाराज
माननीय मुख्यमंत्री - उ0प्र0 शासन
: प्रो. उदय प्रताप सिंह, अध्यक्ष, प्रबन्ध समिति
: श्री रामजन्म सिंह, कार्यकारी प्रबन्धक/मंत्री

संयोजक : आचार्य ओमप्रकाश सिंह, प्राचार्य, दिग्विजयनाथ पी.जी. कॉलेज, गोरखपुर

सह-संयोजक : प्रो. नित्यानन्द श्रीवास्तव- प्रभारी, हिन्दी विभाग
डॉ. विभा सिंह, समन्वयक, गोरखनाथ साहित्यिक केन्द्र
डा. अमिता दूबे, प्रधान सम्पादक, उ.प्र. हिन्दी संस्थान, लखनऊ

आयोजन सचिव : श्री भगवान सिंह
: डॉ. राकेश कुमार
: डॉ. अदिति दूबे

परामर्श दात्री समिति

- आचार्य शैलेन्द्र प्रताप सिंह
- आचार्य सत्येन्द्र प्रताप सिंह
- आचार्य परीक्षित सिंह
- डॉ. प्रदीप राव
- डॉ. प्रत्यूष दूबे
- डॉ. पवन पाण्डेय
- श्री संतोष कुमार त्रिपाठी
- श्री अंकित सिंह
- श्री अश्वनी श्रीवास्तव
- श्री अंकित पाण्डेय